Pioneer Public school (2021-2022)

Date-03/05/2021

Day- Monday

*Class- 5th

*Sub- English

Lesson- 02 question answer.

*Class- 5th

*Sub- EVS

L- 02 question/ answer do in fair copy.

Pioneer Public school(2021-2022)

Date- 03/05/2021

Day- Monday

Class- 5th

Sub- Maths

Ch-3

Watch this video carefully and do practice.

https://youtu.be/PuXRPfB3Jhs

*Subject- hindi

Lesson- 3(हमारे उपयोगी वृक्ष) read it

नीम के वृक्ष के बारे में यह मान्यता है, कि यह वृक्ष जहाँ होता है, वहाँ रोग नहीं पनपता। इसकी सूखी पत्तियाँ जलाई जाएँ, तो मच्छर भाग जाते हैं और मलेरिया से बचाव हो जाता है। नीम की सघन छाया व्याकुल पथिक को प्रसन्नचित्त कर देती है। हमें नीम के वृक्ष भरपूर संख्या में लगाने चाहिए।

पीपल

पीपल भारतीय मूल का वृक्ष है। इसे वनस्पति शास्त्र में 'फाइकस रिलीज ओसा' कहते हैं। इसे बंगला में अशथवा, गुजराती में जारी पीपल, तेलुगू में आशवथमु एवं बोधि, तमिल में आसु, कन्नड़ में अराली, मलयालम में अरच्छू व अराचल कहते हैं। पीपल का वृक्ष विशाल आकार का होता है। इसका छत्र खुला और बिखरा होता है। इसकी शाखाएँ चारों ओर फैली होती हैं। यह पर्णपाती वृक्ष है। इसकी पत्तियाँ चमकदार, चौड़ी, जाली वाली तथा शिखा पर लंबी व तीखी होती हैं। पीपल को सभी प्रकार की भूमि में उगाया जा सकता है।

पीपल के पत्ते

इसके बीजों को सामान्यत: जमीन में बोकर अथवा पौधशाला में सामान्य विधि से पौधे तैयार कर वृक्षारोपण किया जा सकता है। टहनियों को काटकर भी इसे रोपा जा सकता है। पीपल का वृक्ष वन-क्षेत्र, खेत, जलाशय और धार्मिक स्थानों पर लगाया जाता है। यह तेज़ी से बढ़ता है तथा छायादार होता है। इसकी जड़ें पृथ्वी के समानांतर फैलती हैं, जो भूमि के कटाव को रोकती हैं। इसमें फूल और फल अप्रैल से जून के मध्य आते हैं। इसका फल छोटा तथा पकने पर काला अथवा बैंगनी रंग का होता है। सामान्यत: यह पक्षियों के खाने के काम आता है।

पीपल की पत्तियों में प्रोटीन, कैल्सियम व फॉस्फोरस की प्रचुर मात्रा होती है। इसकी पत्तियाँ बकरियों और हाथी को विशेष प्रिय होती हैं। पीपल के वृक्ष से रबर और गोंद भी मिलता है। इसकी लकड़ी सफ़ेद व भूरी, हल्की, मज़बूत व टिकाऊ होती है। इसकी लकड़ी से पैकिंग केस, माचिस बॉक्स, बर्तन आदि बनाए जाते हैं। इसकी छाल में चार प्रतिशत टेनिन होती है, जो रँगाई में प्रयुक्त होती है। पीपल एक आयुर्वेदिक औषध वृक्ष है। पीपल की ताज़ी छाल का अर्क खून साफ़ करता है। छाल के पानी के कुल्ले करने से मसूड़ों की सूजन मिटती है। पीपल का चूर्ण दमा में आराम पहुँचाता है। इसकी छाल को पीसकर, घाव पर लगाने से पुराना घाव तक

ठीक हो जाता है। इसकी पत्तियों को गरम करके सूजे अंग पर बाँधने से सूजन मिट जाती है। इसके बीज शहद के साथ चाटने से रक्त विकार दूर हो जाता है। इस प्रकार पीपल बहुपयोगी वृक्ष है और यह पर्यावरण संतुलित रखता है।

बरगद

बरगद का वृक्ष तेज़ी से बढ़ता है। इसले 'फाइकस बेंगा लेंसिस' भी कहते हैं। इसका बीज कहीं भी पनप कर लंबी-चौड़ी जड़ें फैला देता है। इसकी जड़ें कालांतर में मोटी और मज़बूत होकर अपने आश्रय स्थल को भी छोड़ देती हैं। इस पेड़ की शाखाओं से फूटी जटाएँ नीचे लटककर पुनः ज़मीन में प्रवेश कर तना व जड़ें बन जाती हैं। फिर इन पर नई डालियाँ पनपकर मोटी हो जाती हैं।

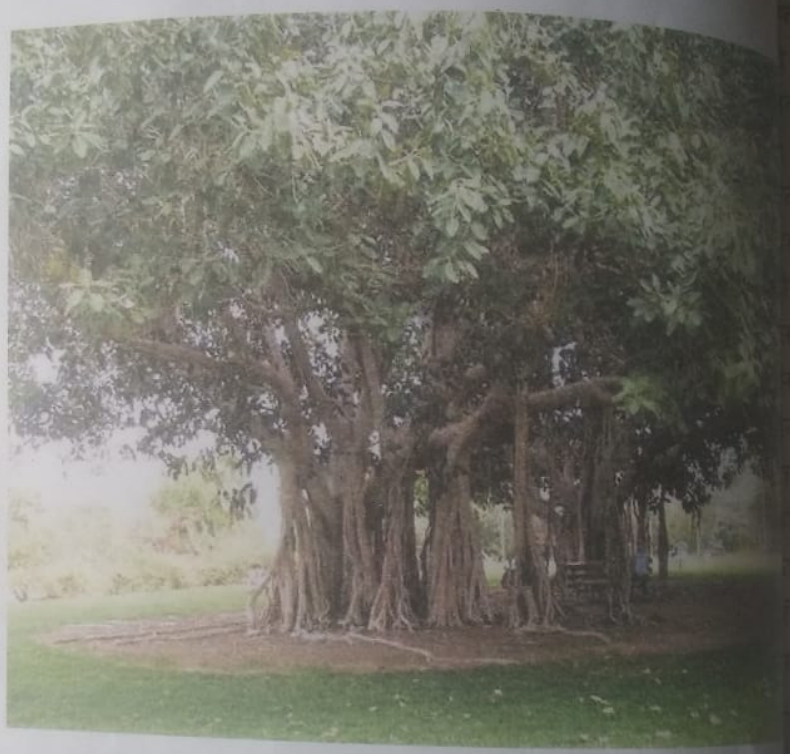

बरगद का पेड़

इस वृक्ष को पौधशालाओं में बीज अथवा कलम लगाकर भी बढ़ाया जा सकता है। बरगद के पेड़ में फूल नज़र नहीं आते। सीधे फल होते हैं। वस्तुतः फूल गूलर के मोटे गूदे के नीचे छिपे रहते हैं। गूलर में छिलका नहीं होता तथा ये लाल बेर तरह जोड़ों में उगते हैं। इसमें असंख्य छोटे-छोटे फूल तथा छोटे-छोटे कीड़े विद्यमान रहते हैं। ये कीड़े के शीर्ष पर स्थित छेद में से भीतर प्रवेश करते हैं और वहाँ अंडे दे देते हैं। ये कीड़े अन्य गूलरों में प्रविष्ट हो वंश वृद्धि करते हैं। ये गूलर फल फरवरी और मई के बीच पकते हैं।

बरगद के वृक्ष के कई उपयोग हैं। इसकी लकड़ी पानी में गलती नहीं है। इसकी लटकती हुई जड़ों में से मोटा रेशा प्राप्त होता है। इसका प्रयोग रस्सा बनाने में होता है। इसके पत्तों से पत्तल एवं दोने बनते हैं। इ दूध से एक विशेष प्रकार का चूना बनाया जाता है, जो कई प्रकार के दर्द का निवारक होता है। इसका प्र कई औषधियों में किया जाता है। बरगद की छाल का अर्क, मधुमेह के रोग में रामबाण का काम करता है।

3/5/20
Monday

Sub → Hindi

Read it

3 हमारे उपयोगी वृक्ष

पाठ परिचय (Introduction)

हमारे जीवन में वृक्षों का बहुत महत्व है। स्वस्थ जीवन के लिए वृक्ष आवश्यक हैं। भारतीय संस्कृति में वृक्षों की पूजा करने की परंपरा रही है। वृक्षों से वातावरण प्रदूषणमुक्त रहता है। यहाँ हम कुछ उपयोगी वृक्षों के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।

नीम

नीम का वैज्ञानिक नाम 'ऐजेडिरक्टा इंडिका' है। नीम को गुजराती में 'लोमड़ी', बंगला में 'नीमगाछ' तथा दक्षिण-भाषाओं में 'वेप' के नाम से जाना जाता है। नीम एक बहुपयोगी वृक्ष है। इसके पत्ते, फल, फूल, गोंद, छाल, तना, लकड़ी, जड़ आदि सभी भाग उपयोगी हैं। विशेषत: आयुर्वेदिक औषधियों में इसका विशेष प्रयोग होता है।

नीम का फल 'निबोली' वर्षा के प्रारंभ होते ही पककर नीचे गिरने लगता है। इन्हें एकत्र करके सुखा लिया जाता है। लगभग एक किलोग्राम में 3500 सूखे बीज होते हैं।

नीम का वृक्ष

नीम का वृक्ष विशाल और घना होता है। इसे सूर्य का प्रकाश भाता है। अत: इसे खुले स्थान में लगाना चाहिए। इसका वृक्ष छायादार होता है। यह वृक्ष भूमि के कटाव को रोकने का महत्वपूर्ण कार्य करता है। प्राण-वायु ऑक्सीजन उपलब्ध कराने में नीम सर्वाधिक उपयुक्त वृक्ष है। नीम की पत्तियों में भी औषधीय गुण होते हैं। सभी चर्म रोगों में नीम की पत्तियों का उबला हुआ पानी प्रयोग में लाया जाता है। नीम की दातुन करना दाँतों के लिए उपयोगी है। अब तो बाज़ार में नीम 'टूथपेस्ट' और 'एंटीबॉयटिक' के रूप में भी उपलब्ध है।

किया जाता है। इस पर खुदाई एवं नक्काशी का काम अच्छा होता है। इसमें प्राकृतिक रूप से सुंदर चित्र बने होते हैं। शीशम की जड़ों से निकला तेल चिकित्सा के लिए प्रयोग किया जाता है। इसकी पत्तियाँ अच्छा चारा प्रदान करती हैं। यह वृक्ष भूमि की उर्वरा शक्ति को बढ़ाता है। हरे-भरे वातावरण, आर्थिक उपयोग, छायादार मार्ग और समुचित भू-संरक्षण के लिए शीशम के पेड़ लगाने चाहिए।

शीशम क

शब्दार्थ (Word-meaning)

मान्यता–माना जाना (recognition); पथिक–यात्री (traveller); औषधि–दवा (medicine); क
the period); विद्यमान–मौजूद (existing); प्रजाति–किस्म (race); उर्वरा–उपजाऊ (fert
(available); व्याकुल–बेचैन (restless); प्रविष्ट–दाख़िल (to enter); संरक्षण–बचाव (protec

बबूल

यह वृक्ष हमारी ईंधन, चारा एवं लकड़ी तीनों आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। पूर्वी मैदानी जिलों में इस वृक्ष की बहुलता है। गहरी, शुष्क, चिकनी मिट्टी इसके लिए उपयुक्त रहती है। इस वृक्ष की ऊँचाई औसतन 8-10 मीटर होती है। इसका छत्र काफी घना होता है। इसकी पत्तियों में 15 प्रतिशत प्रोटीन होता है। इसे पशु बड़े चाव से खाते हैं। बबूल की फलियाँ व छाल चमड़ा रंगने के काम आती है। इसकी लकड़ी को जलाने, कृषि औज़ार बनाने एवं इमारतों में प्रयोग किया जाता है। बबूल का गोंद, जो 'गम एरविक' के नाम से जाना जाता है, काफ़ी उपयोगी होता है। इस वृक्ष की आयु 15 वर्ष है, इसके बाद यह काटने योग्य हो जाता है। बबूल का बीज मई-जून में पककर तैयार हो जाता है।

बबूल का वृक्ष

राजस्थान की मरुस्थलीय परिस्थितियों के अनुकूल बबूल की एक नई प्रजाति तैयार की गई है, जिसे 'अर्केशिया टोर्टलिस' कहते हैं। यह मूलत: इजरायल देश की परिस्थितियों में उगने वाला वृक्ष है। यह मरु, ऊसर, बंजर एवं रेतीली भूमि में अच्छी वृद्धि करता है। यह मध्यम ऊँचाई तक बढ़ने वाला काँटेदार वृक्ष है। इस प्रजाति के बबूल का जितना सघन वृक्षारोपण होगा, लकड़ी उतनी ही अधिक मात्रा में प्राप्त होगी। इसकी छाल में प्रचुर मात्रा में टेनिन पाया जाता है। इसके वृक्ष से अच्छे किस्म का गोंद भी मिलता है।

शीशम

शीशम के वृक्ष को इमारती लकड़ी में सर्वाधिक महत्वपूर्ण माना जाता है। यह एक दीर्घजीवी और विशाल वृक्ष है, जो उत्तरी भारत में बहुतायत से उगता है। शीशम को पंजाबी में टाली, तमिल में टोटा-कट्टी, बंगला में शीश, कन्नड में बिरीडिमारी कहते हैं। इसका वनस्पतीय नाम 'डालबेर-जिया-खीसू' है। यह पेड़ झड़नशील पत्तों और ऊँचे हल्के पर्ण-छत्र वाला होता है। इसका छिलका भूरा और कुछ खुरदरा-सा होता है। इसमें पत्तियाँ ही होती हैं। इसके फूल पीले होते हैं। इसमें कलियाँ भी लगती हैं। यह पेड़ लगभग 50 वर्षों में 24 इंच व्यास प्राप्त कर लेता है। शीशम की लकड़ी का उपयोग फर्नीचर, तोपगाड़ी के पहिए बनाने तथा इमारतों में

Day - Monday Class - V

Monday

Date 23|09|2024

Ans:- Mahabali, the king of Asuras, used to be the king of Kerala. He was very strong and powerful. His subject were very happy under his rule.

Q.6|- Who was Vamana? What did he want from Mahabali?

Ans:- Vamana was fifth of the 10 avatars of the Hindu god Vishnu. Vamana want is a piece of land, as much as I can cover in three steps.

Q.7|- What is the most exciting sports event held during Onam?

Ans:- Among sports events, the most exciting one is the snake Boat Race. Long and sleek boats, rowed by many

Day
~~Tuesday~~
Monday

Class - V

PAGE
DATE 03/05/2024

people, take part in it.
Thousands of spectatory come
to watch this race.

Class-V[th]
Day - Monday
03-05-21 Subject-Science/E.V.S

Chapter-02
Deficiency Diseases

Answer the following Questions:-

1. What are the deficiency diseases?

Deficiency diseases are caused by lack of some nutrients in our food.

2. Why are deficiency diseases called non-communicable diseases?

Deficiency diseases called non-communicable diseases because these diseases cannot spread from one person to another. They are non-communicable.